


---

# Sanskritaya Pradadatu

——  
संस्कृतिय प्रददतु

——  
Document Information



---

Text title : Samskritaya pradadAtu  
File name : saMskRRitAyapradadAtu.itx  
Category : misc, sanskritgeet  
Location : doc\_z\_misc\_general  
Transliterated by : manish gavkar manishyg at gmail.com  
Proofread by : manish gavkar manishyg at gmail.com, NA  
Latest update : April 4, 2020  
Send corrections to : sanskrit@cheerful.com

---

This text is prepared by volunteers and is to be used for personal study and research. The file is not to be copied or reposted without permission, for promotion of any website or individuals or for commercial purpose.

**Please help to maintain respect for volunteer spirit.**

---


Please note that proofreading is done using Devanagari version and other language/scripts are generated using **sanscript**.

---

April 4, 2020

*sanskritdocuments.org*

---



---

## Sanskritaya Pradadatu

---

### संस्कृताय प्रददातु

---



सुन्दरं सुबद्धमस्माकं संस्कृतम् ।  
संस्कृताय प्रददातु स्वकं ज्वनम् ।  
पठतु विभक्तु वदतु सदा हि संस्कृतम् ।  
भारते पश्येम पुनर्हि संस्कृतम् ॥ ४ ॥

प्राक्षांश्च दत्वाऽपि शेष्यं तु यद् दे ।  
उद्येयं कदापि य त्यक्तं न तद् दे ।  
यो हि स्तोति नित्यं पुनाति संस्कृतम् ॥ १ ॥

कस्यास्ति संस्कृतं न निश्चिनोति कश्चित् ।  
ममैव संस्कृतमिति भ्रुतेऽपि कश्चित् ।  
आगच्छ मित्र तावकं संस्कृतम् ॥ २ ॥

जुवेषु वसति संस्कृतेन समात्मा ।  
यो ज्येतद् जानाति सोऽत्र परमात्मा ।  
संस्कृतस्य यरणे ददामि पङ्कजम् ॥ ३ ॥

Encoded from audio and proofread by manish gavkar manishyg at gmail.com

---

---

*Sanskritaya Pradadatu*

pdf was typeset on April 4, 2020

---

Please send corrections to [sanskrit@cheerful.com](mailto:sanskrit@cheerful.com)

